Date
Page

उपचार कैसे प्रारम्भ किया जाए →

(i) उपचार कार्यक्रम निदान पर आधारित होता है लेकिन इसे सफल बनाने के लिए इसमें शामिल विद्यार्थियों की रुचि व स्वीकृती होनी चाहिए। अत: उपचार कार्यक्रम को विद्यार्थियों के निदान लिए गये मजबूत बिन्दुओं पर आधारित गतिविधियों से प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

(ii) उपचार के लिए अध्यापक को सीधे ही छात्रों की कमियों / कमजोरियों को नहीं बताना चाहिए बल्कि उनकी अच्छाईयों एवं मजबूत बिन्दुओं से शुरुआत करते हुए कमजोरियों पर आना चाहिए।

(iii) प्रत्येक अध्याय का प्रारम्भ व अन्त गतिविधियों से करना चाहिए ताकि सफलता की गारंटी हो।

(iv) एक घण्टे के सत्र में विद्यार्थियों की कमियों को बताने के लिए दस मिनट से अधिक समय नहीं लेना चाहिए। उनकी अच्छाईयों का उपयोग करते हुए कमजोरियों पर आना चाहिए।

(v) विद्यार्थियों को उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों के लिए योजना बनाने में शामिल करना चाहिए।

(vi) विद्यार्थियों को छोटे - समूह में अनुदेशन देना चाहिए तथा प्रत्येक दिन समूह में सफल होने वाले विद्यार्थियों को ढ़ँटना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(vii) विद्यार्थियों के माता-पिता एवं अन्य शिक्षकों से लगातार सम्पर्क में रहना चाहिए तथा उन्हें विद्यार्थी की सफलता के बारे में बताना चाहिए ताकि वे भी विद्यार्थियों को पुनर्बलन प्रदान कर सकें।

(viii) विद्यार्थियों को निश्चित गतिविधियों को पसन्द या नापसन्द करने के अवसर प्रदान करना चाहिए।

(ix) नये क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए पुरस्कार प्रदान किये जाने चाहिए।

(x) एक विद्यार्थी को अन्य विद्यार्थियों के साथ कार्य करने के अवसर प्रदान करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(Diagnostic Tests) →

विद्यार्थियों की विशिष्ट कमजोरियों के निर्धारण के दृष्टिकोण से एक सीमित विषय क्षेत्र में उपलब्धि मापने का एक इच्छित परीक्षण, जिसके आधार पर उपचारात्मक उपाय किए जा सके, निदानात्मक परीक्षण कहलाता है।

निदानात्मक परीक्षण निर्माण के सोपान (Steps in Construction of a Diagnostic Tests) →

① **योजना बनाना (Planning)** → निदानात्मक परीक्षण के निर्माण की प्रक्रिया उपलब्धि परीक्षण से भिन्न होती है। अध्यापक को इसके निर्माण के पहले सुनिश्चित योजना बनानी होती है। इसके निर्माण के लिए सबसे पहले शिक्षक को विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों को जानने के लिए अधिक जानकारी इकट्ठा करना होता है। उसके बाद उनके आधार पर संबंधित विषय-वस्तु का विस्तृत विश्लेषण किया जाता है। विषय-वस्तु को अधिगम बिन्दुओं में तोड़ा जाता है और उन्हें पदानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इन अधिगम बिन्दुओं में निरन्तरता होनी आवश्यक होती है।

② **पदों को लिखना (Writing the Item)** → निदानात्मक परीक्षणों के निर्माण के लिए नील-पत्र (Blue Print) बनाने की आवश्यकता नहीं होती है अतः दूसरा सोपान पद लेखन का होता है जिसमें विषय वस्तु विश्लेषण के दौरान

Scanned with CamScanner

निर्धारित किए गए अधिगम बिन्दुओं के पदानुक्रम के आधार पर पदों को लिखा जाता है। प्रत्येक अधिगम बिन्दु से संबंधित इतने पद लिखे जाते हैं ताकि उनसे पर्याप्त निर्णयात्मक साक्ष्य प्राप्त हो सकें। इसके लिए सामान्यतः एक अधिगम बिन्दु से संबंधित तीन से अधिक पद लिखे जाने चाहिए। वस्तुनिष्ठ पद के साथ-2 लघुउत्तरीय पद भी लिखे जाने चाहिए। तथा औसत कठिनाई स्तर के होने चाहिए। इनके लिए कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए। विद्यार्थी जितना समय सभी पदों के लिए उत्तर देने के लिए चाहते हैं, उन्हें उतना समय प्रदान करना चाहिए।

(3) पदों को एकत्रित करना (Assembling of the Items)

पद लेखन के बाद निदानात्मक परीक्षण के लिए पदों को व्यवस्थित किया जाता है। इसके लिए प्रत्येक अधिगम बिन्दु से सम्बंधित सभी पदों को एक साथ रखा जाता है। भले ही वे पद विभिन्न प्रकार (वस्तुनिष्ठ, लघुउत्तरीय) के हों और फिर उन्हें जटिलता के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। ऐसा करने से विद्यार्थियों को एक अधिगम बिन्दु से सम्बंधित प्रश्न एक साथ मिलते है।

Scanned with CamScanner